



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

ईश्वरभक्तिविषये बाइबिल: किं कथयति? — तस्य जीवने आचरणम् · स्ट्रॉङ्गसंख्यायुक्तानि KJV-शास्त्रवचनानि

जीवने आचरणम् · ईश्वरेण सह गमनम् — सर्पणम्, गमनम्, धावनम्, समापनम्

ईश्वरभक्तिः — मौलिकं बैबलधर्मसिद्धान्तम्

प्रारम्भिकवचनम्

ईश्वरभक्तिः सर्वेभ्यः वस्तुभ्यः प्रथमं गमनम् अस्ति । बालकः एकस्मिन् दिने गन्तुं न शिक्षते — प्रथमं सः हस्तजानुभ्यां सर्पति; ततः तस्य पिता तं बाहुभ्यां गृहीत्वा पदे पदे गन्तुं शिक्षयति; ततः सः एकाकी गच्छति; ततः सः वर्धते, धावति च । यः पुरुषः सम्यक् धावति सः स्पर्धायां धावति, स्पर्धायाः च अन्तः भवति, अन्ते च मुकुटः तिष्ठति । एवमेव ईश्वरेण सह गमनस्य विषयेऽपि भवति । यूनानीशब्दः अस्ति यूसेबेइया (G2150, ईश्वरभक्तिः) — भक्तिः, ईश्वरस्य सम्यक्-पूजा; तस्याः च सहचरः अस्ति यूसेबोस् (G2153, भक्तः), यः सा एव भक्तिः आचरिता । इब्रीयभाषा तादृशं पुरुषं खासीयद् (H2623, भक्तः) इति वदति — दयालुः, पवित्रः, सन्तः; अब्राहमं प्रति च ईश्वरः उक्तवान्, मत्समक्षं गच्छ, तामीम् (H8549, सिद्धः) भव — सम्पूर्णः, अखण्डः, निर्दोषः । इदम् अध्ययनं पुरुषस्य सम्पूर्णमार्गेण ईश्वरभक्तिं नयति — कथं सः तां सर्पन् एव प्राप्नोति; कथं सः तां प्राप्य तस्यां गच्छति; कथं सः तया सह धावति, योद्धा इव तां समर्पयति; कथं च सः अन्ते सीमां तरति, यत्र मुकुटः स्थापितः, यत्र च अस्माकम् ईश्वरस्य वचनं सर्वदा तिष्ठति । तत् अन्वेषय ।

त्रयः प्रश्नाः यान् इदम् अध्ययनम् उत्तरतिः

१. ईश्वरभक्तिः कुत्र प्राप्यते, मनुष्यः च तां प्रथमं कथं प्राप्नोति?
२. यदा पुरुषस्य ईश्वरभक्तिः भवति, तदा तेन तया किं कर्तव्यम्, प्रतिदिनं च सा कथम् आचर्यते?
३. स्पर्धा कथं समाप्यते — कः मुकुटः संचितः तिष्ठति, किं च वचनं सर्वदा स्थास्यति?

ग्रीकभाषायाः प्रमुखशब्दाः

“ईश्वरभक्तिः” — G2150 **eusebeia** — भक्तिः; ईश्वरभक्तिः, पवित्रता
धर्मस्य निगूढं रहस्यं महत् वर्तते ।

“धार्मिकः” — G2153 **eusebos** — धार्मिकतया; ईश्वरभक्तिपूर्वकं रीत्या
ये केचन ख्रीष्टयीशौ धार्मिकतया जीवितुम् इच्छन्ति

“साधु” — G2095 **eu** — कल्याणम्, साधु
देवभक्तिः ईश्वरस्य सम्यक् पूजनम् अस्ति

“पूजा” — G4576 **sebomai** — धार्मिकः, भक्तः, पूजा

ईश्वरस्य सम्यक् पूजा

“शक्तिः” — **G1411 dunamis** — शक्तिः, सामर्थ्यम्, बलम्
तस्य दैवी शक्तिः अस्मभ्यं सर्वाणि दत्तवती।

“व्यायामः” — **G1128 gumnazo** — व्यायामाय, अभ्यासाय
व्यायामं परमेश्वरभक्त्यर्थं कुरु, न तु अन्यत्र

“चलनम्” — **G4748 stoicheo** — क्रमेण चलितुम्, पङ्क्त्या गन्तुम्
वयमपि आत्मना चरामः।

“अभक्तिः” — **G763 asebeia** — अधर्मः, अभक्तिः
अधर्मं सांसारिकाभिलाषांश्च निराकुर्वन्तः

“सन्तोषः” — **G841 autarkeia** — सन्तोषः, पर्याप्तिः
भक्तिः संतोषेण सहिता महान् लाभः भवति।

“युद्ध” — **G73 agon** — संघर्षः, युद्धम्, स्पर्धा
विश्वासस्य शोभनं युद्धं युध्यस्व।

“पथः” — **G1408 dromos** — धावनम्, मार्गः
मया स्वधावनं समाप्तम्।

“सहते” — **G3306 meno** — स्थातुं, स्थिरं भवितुं, सोढुं, अवशिष्टं भवितुम्
प्रभोः वचनं सर्वदा तिष्ठति

“कुरु” — **G2005 epiteleo** — सम्पादयति, समापयति, सम्पादनं करोति
भविष्यन्तं यीशुख्रीष्टस्य दिनं यावत् साधयिष्यति

(मम स्वकीयाः विचाराः — पश्यत कथं शब्दः निर्मितः। स्ट्रॉङ्ग्स्-अनुसारं यूसेबेइया (G2150, धार्मिकता) द्वयोः शब्दयोः उपरि स्थिता अस्ति — G2095, सम्यक्, तथा G4576, पूजनं कर्तुम्, भक्तं भवितुम् — सम्यक्-भक्तिमतः ईश्वरस्य सम्यक्-पूजनम्। धार्मिकता तु ईश्वरस्य सम्यक् पूजनम् एव अस्ति — न केवलं वचने, किन्तु सम्पूर्णं आचरणे च। तथा यूसेबोस् (G2153, धार्मिक) स एव शब्दः पादयोः स्थापितः अस्तिः न किमपि यत् मनुष्यस्य भवति, किन्तु यथा मनुष्यः जीवति तत्।)

हिब्रूभाषायाः मुख्यशब्दाः

“धार्मिकः” — **H2623 chacyd** — भक्तः, धर्मपरायणः, साधुः, पवित्रः
परमेश्वरः भक्तं स्वार्थं पृथक् चकार।

“सम्पूर्ण” — **H8549 tamiym** — अखण्डम्, सम्पूर्णम्, स्वस्थम्, समग्रम्, दोषरहितम्
मम अग्रे गच्छ, सम्पूर्णः च भव।

“दया” — **H2617 chesed** — अनुग्रहः, कृपा, दया
धर्मपरायणः पुरुषः दयायुक्तः पुरुषः भवति।

“दयालु” — **H2616 chacad** — दयालु भवितुम्; स्वयं दयावन्तं दर्शयितुम्
दयालु भवितुम्, यतः कृपा जायते

“गच्छ” — **H8637 tirgal** — चालयितुम् उपदेश्युम्; गन्तुं कारयितुम्
अहम् एकैकम् अपि गमनं शिक्षितवान्।

(मम स्वकीयाः विचाराः — chacyd (H2623, धार्मिकः) chesed (H2617, कृपा) इत्यनेन सह निकटसम्बद्धः अस्ति; उभयम् एकस्मात् मूलात् उद्भवति, chacad (H2616, दयालुः भवितुम्)। पुरातनविधानस्य धार्मिकः पुरुषः कृपायुक्तः पुरुषः भवति — सः कृपां प्राप्तवान्, तां च प्रदर्शयति। च tamiym (H8549, सम्पूर्णः) निर्दोषं मांसं न भवति; Strong's इति कोशः वदति — सम्पूर्णः, पूर्णः, स्वस्थः, अखण्डः। मम समक्षे चर, अखण्डः भव — चलने ते सर्वस्वम्, किञ्चिदपि न रक्षितम्।)

I. सर्पणम् — तत् कथं प्राप्तव्यम्

(मम स्वकीयाः विचाराः — सर्वः पथः नीचात् आरभ्यते। शिशुः पादाभ्यां गमनात् पूर्वं हस्तजानुभ्यां चलति, कोऽपि च ईश्वरभक्तौ पूर्णवयस्कः न जायते। तत् प्रथमं प्राप्तव्यम्; एते साक्षिणः तत् कुत्र प्राप्यते इति दर्शयन्ति। तत् स्वशक्त्या न लभ्यते — तत् तस्य दैव्या शक्त्या दत्तं भवति — दुनामिस् (G1411, शक्तिः) — तत् च एकस्मिन् पुरुषे प्राप्यते। नीचात् आरभस्व, अल्पात् आरभस्व, आरभस्व एव।)

A. 1 Timothy 4:7 यान्युपाख्यानानि दूर्बारानि बृहन्नैवैषितामेर योगयानि च तानि ९२२या ब्रिस्ज्यान्ताम् ईश्वरभक्तये यत्नः क्रियातापः
[G2150 eusebeia ■] [G1128 gumnazo ■]

অশ্লীলানি জরাবৃদ্ধানাং চ কাণ্ঠ্যকথা: ত্যাজয় + ধর্মপরাযণতায়ৈ স্বয়ং ব্যায়ামং কুরু।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — স্ট্রাঙ্ক্‌স্‌ ইতি কথয়তি যত্ *gumnazo* (G1128, অধ্যাস:) ইত্যস্য অর্থ: অধ্যাসং কর্তুন্ম ইতি, যথা ক্রীডাসু। ধর্মশীলতা স্থিরং তিষ্ঠত: পুরুষস্য সমীপং ন আগচ্ছতি; তেন স্বয়মেব তদর্থম্ অধ্যাস: করণীয়:। পরন্তু অগ্রিমং সাধ্যং দৃষ্ট্বা, যথা ত্বং ন মন্যেথা: যত্ অধ্যাস: এব সর্বস্বম্ ইতি: বস্তু স্বয়ং দত্তং भवति।)

B. 2 Peter 1:3 জীবনার্থম্ ঐশ্বর্যভক্ত্যর্থঞ্চ যদ্যদ্ আশ্রয়কং তৎ সর্বত্র গৌরবসদগুণাভ্যাম্ অস্মদাহ্বানকাৰিণস্তত্ত্বজ্ঞানদ্বাৰা

তস্যৈশ্বরীযশস্কিৰ্ণম্ভ্যং দত্তবতী **[G1922 epignosis ■] [G2150 eusebeia ■]**

তস্য দৈবী শক্তি: জীবনায় ঐশ্বর্যভক্তয়ে চ সম্বন্ধানি সর্বাণি বস্তুনি অস্মভ্যং দত্তবতী।

C. 1 Timothy 3:16 অপৰং যস্য মহত্ত্বং সর্বস্বীকৃতম্ ঐশ্বর্যভক্ত্যন্তঃ নিগূঢ়াক্যমিদম্ ঐশ্বর্যে। মানবদেহে প্রকাশিত আত্মনা সপুণ্যীকৃতো দূতৈঃ সন্দৃষ্টঃ সর্বজাতীয়ানাং নিকটে ঘোষিতো জগতো বিশ্বাসপাত্রীভূতস্তেজঃপ্রাপ্তয়ে স্বর্গং নীতশ্চেতি **[G2150 eusebeia ■]**

ভক্তিরহস্যং মহত্ অস্তি = ঐশ্বর: শরীরে প্রকট: अभवत्।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — অত্র ভক্তে: প্রাপ্তিস্থানম্ অস্তি। ভক্তে: রহস্যং ন নিয়ম: ন চ বিধি:; তত্ তু পুরুষ: এব অস্তি — ঐশ্বর: মানবশরীরে প্রকটিত: अभवत्। ভক্তিং প্রাপ্তুং তম্ এব অন্বিষ্যত। यस्य पुत्र: अस्ति, तस्य समक्षे सम्पूर्ण: मार्ग: विद्यते।)

D. Titus 1:1 অনন্তজীবনস্যাশাতো জাতায়া ঐশ্বর্যভক্তে র্যোগ্যস্য সত্যমতস্য যৎ তৎরজ্ঞানং যশ্চ বিশ্বাস ঐশ্বর্যস্যাভিৰুচিতলৌকৈ লভ্যতে তদর্থং **[G2150 eusebeia ■] [G1922 epignosis ■]**

সত্যস্য জ্ঞানম্ → যত্ ঐশ্বর্যভক্ত্যনুসারি বর্তে।

E. 1 Peter 2:2 যুগ্মাভিঃ পরিব্রাজ্য বুদ্ধিপ্রাপ্ত্যর্থং নরজাতশিশুভিৰি প্রকৃতং ব্রাদুক্ষং পিপাস্যতাং **[G837 auxano ■] [G1051 gala ■]**

নবজাতশিশব: ইব + বচনস্য নিষ্কপটং দুগ্ধং কাময়ধ্বম্ → যেন যুয়ং তেন বর্ধধ্বম্।

F. Deuteronomy 1:31 ↗ *read this in your Bible*

পরমেশ্বর: তব দেব: ত্বাম্ অবহত্ + যথা পুরুষ: স্বপুত্রং বহতি + সর্বস্মিন্ পথি যত্র যুয়ম্ অগচ্ছত।

G. Hosea 11:3 ↗ *read this in your Bible*

অহম্ ইফ্রাইমম্ অপি গন্তুং শিক্ষিতবান্ + তান্ স্ববাহুভি: ধৃতবান্।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — স্ট্রাঙ্ক্‌মহোদয়স্য মতেন তির্গল্ (H8637, গন্তুং শিক্ষণম্) ইত্যস্য অর্থ: চালনং কারয়িতুন্ম ইতি भवति। ঐশ্বর্যস্য পুস্তকে বালকস্য প্রথমপদানি শিক্ষয়িতুং এক: শব্দ: বর্তে, তং চ স: স্বস্মৈ গৃহ্ণাতি: ময়া ইফ্রাইম: চলিতুং শিক্ষিত:, তান্ বাহুভ্যাং ধারয়ত। স: বহতি, স: শিক্ষয়তি, স: স্বস্থং করোতি। কোঽপি একাকী এতত্ গমনং ন শিক্ষে।)

H. Psalm 34:11 ↗ *read this in your Bible*

আগচ্ছত, হে বালকা:, মাং শৃণুত, অহং যুগ্মান্ যহোবাভীতি শিক্ষয়িষ্যামি।

I. Hebrews 11:6 কিন্তু বিশ্বাসং বিনা কোহপীশ্বর্য্য বোচিতুং ন শক্নোতি যত ঐশ্বর্য্যোহস্তি স্বাস্থ্যেবিলোকোভ্যঃ পূবস্কাবং দদাতি চেতিকথায়াম্ ঐশ্বর্য্যবর্ণনগতৈ বিশ্বাসিতর্যং **[G1567 ekzeteo ■]**

য: ঐশ্বর্যম্ উপগচ্ছতি তেন বিশ্বাসিতব্যং যত্ স: বিদ্যেত, যত্নেন তং মার্গযতাং চ ফলদাতা भवतीति।

J. Acts 3:2 তস্মিন্নৈব সময়ে মন্দিরপ্রবেশকানাং সমীপে ভিক্ষাবর্ণার্থং যৎ জন্মখঞ্জমানুষং লোকা মন্দিরস্য সুন্দরনাম্নি দ্বাৰে প্রতিদিনম্ অস্থাপয়ন্ তৎ রহস্তস্তদ্বাৰং আনয়ন্ **[G941 bastazo ■]**

এক: পুরুষ: মাতৃগর্ভাত্ এব পড়্গু: + উহ্যমান: আসীত্ + প্রতিদিনং মন্দিরস্য দ্বারে স্থাপ্যতে স্ম।

K. Acts 3:12 তদ্ দৃষ্ট্বা পিতরস্তেভ্যোহকথ্যৎ, হে ইস্রায়েলীয়লোকা যুয়ং কুতো হনেনাশচর্য্যং মন্যশ্বে? আরাং নিজশক্ত্যা যদ্বা নিজপুণ্যেন খঞ্জমনুষ্যমেনং গমিতরন্তরিতি চিন্তয়িত্বা আরাং প্রতি কুতোহনন্যদৃষ্টিং কুৰ্থৎ? **[G4043 peripateo ■] [G2150 eusebeia ■]**

যুয়ং কিমর্থম্ অস্মান্ এবং সুদৃষ্ট্যা পশ্যথ + যত্ স্বকীয়েন সামর্থ্যেন পবিত্রতয়া বা বয়ম্ এনং মনুষ্যং গন্তুং কৃতবন্ত: ইতি মন্যধ্বে?

L. Acts 3:8 ততো গমনাগমনে কুরবন্ উল্লস্ফন্ ঐশ্বর্যং ধন্যং বদন্ তাভ্যাং সার্কং মন্দিরং প্রাৱিশৎ **[G4043 peripateo ■]**

স উত্প্লুত্য উত্স্বয়ী, অচলত্ চ + চলন্, উত্পলবমান:, ঐশ্বর্যং স্তুবং।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — একস্মিন্ পুরুষে সম্পূর্ণ প্রথমং সোপানং পশ্য। জন্মত: পড়্গু:, বাহ্যমানশ্চ — ত্বমপি তথৈব আসী:। পিতরস্য মুখে "পবিত্রতা" ইতি শব্দ: যূসেবেইয়া (G2150, ধর্মপরাযণতা) অস্তি: ন মনুষ্যাণাং শক্ত্যা বা ধর্মপরাযণতয়া বা স: চলিতুং কারিত:। ঐশ্বরেণ গমনং দত্তম্; তস্য পুরুষস্য প্রথমং গমনং মন্দিরং প্রতি আসীত্, ঐশ্বর্যং স্তুবন্। অধুনা যত্ ত্বং তিষ্ঠসি, চলিতুং শিক্ষ।)

II. গমনম্ — যত্ এতত্ তব সমীপে অস্তি তেন সহ কিং কর্তব্যম্

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — শিশু: পাদযো: তিষ্ঠতি; অধুনা গমনং भवति। ভক্তি: পেটিকায়াং স্থাপনীয়া বস্তু ন भवति; অপি তু দিনে দিনে গমনীয়: মার্গ: অস্তি। এতেষু সাধিষু ঐশ্বরেণ ভক্তান্ সিদ্ধান্ চ আহুতা: পুরুষা: পশ্যন্তু — যৈ: তেন সহ গমনং কৃতম্। তথা গমনং যত্ অপেক্ষে তত্ পশ্যন্তু — কদাচিত্ শোভনং প্রদর্শনং ন, অপি তু সর্বথা সম্পূর্ণ হৃদয়ম্।)

A. Genesis 5:24 ↗ *read this in your Bible*

হনোক: ইশ্বরেণ সহ অচরত্ + স নাসীত্; যত: ইশ্বর: তং জগৃহে।

B. Genesis 6:9 ↗ *read this in your Bible*

নোহ: ধাৰ্মিক: পুরুষ: সিদ্ধ: চ আসীত্ + নোহ: ইশ্বরেণ সহ অচরত্।

C. Genesis 17:1 ↗ *read this in your Bible*

মম সমক্শং গচ্ছ, ত্বং চ সিদ্ধো ভব।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — ত্রয়: পিতর: পার্শ্বে স্থাপয়িত্বা শব্দস্য বৃদ্ধি পশ্যতু। হনোকস্য বিষয়ে লিখিতম্ অস্ति, স: ইশ্বরেণ সহ অচরত্। নোহস্য বিষয়ে, স্বপীঠ্যাং সিদ্ধ:, স: ইশ্বরেণ সহ অচরত্। আব্রামায় তু আজ্ঞারূপেণ উক্তম্, মম পুরত: চর, সিদ্ধश्চ ভব। যত্ প্রথমযো: দ্বয়ো: বিষয়ে লিখিতম্ আসীত্ তত্ তৃতীয়ায় আজ্ঞাপ্তম্ — তথা তামীয্ (H8549, সিদ্ধ) ইতি স্ট্রোংমহোদয়স্য মতেন সম্পূর্ণ:, অখণ্ড:, স্বস্থ: চ অস্ति। ইশ্বরেণ সহ চরণং সৰ্বদা সম্পূর্ণস্য মনুষ্যস্য চরণম্ আসীত্।)

D. Micah 6:8 ↗ *read this in your Bible*

ন্যাযং কুরু + দয়াং প্রীণীহি + স্বকীয়েশ্বরেণ সহ বিনয়েন চর।

E. Psalm 4:3 ↗ *read this in your Bible*

পরমেশ্বর: ধাৰ্মিকং জনং স্বার্থে পৃথক্ কৃতবান্ + যদা অহম্ আহ্বয়ামি তদা পরমেশ্বর: শ্রুণোতি।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — অত্র তিষ্ঠতি চাসীদ্ (H2623, ধর্মপর:), চেসেদ্ (H2617, কৃপা) ইত্যস্য পুরুষ:। ধর্মপর: পুরুষ: জনসমূহে ন বিলুপ্যতে; প্রভু: তং স্বার্থে পৃথক্ কৃতবান্, যদা চ স: আহ্বয়তি তদা তং শ্রুণোতি। ধর্মপরতয়া গমনং পৃথক্কৃততয়া গমনম্ অস্ति, শ্রুততয়া গমনম্ অপি অস্ति।)

F. Colossians 2:6 অতো যুযং প্রভুং যীশুখ্রীষ্টং যাদৃগ্ গৃহীতব্রতন্তাদৃক্ তম্ অনুচরত [G4043 peripateo ■]

যুযং যথা খ্রীষ্টং যীশুং প্রভুং প্রাপ্তবন্ত: → তথা তস্মিন্ চরত।

G. Colossians 1:10 প্রভো যোগ্যং সর্বত্র সন্তোষজনকঞ্চাচাৰং কুর্য্যাতার্থত ঐশ্বরভজ্ঞানে বর্দ্ধমানাঃ সর্বসৎকর্মরূপং ফলং ফলেত

[G4043 peripateo ■]

প্রভুং প্রতি যোগ্যতয়া সর্বতোষায় চরত + সর্বসৎকর্মণি ফলবন্ত: ভবত।

H. Galatians 5:25 যদি ব্রহ্ম আত্মনা জীৱামন্তুঃস্বাভিকাচাৰোঃস্বাভিঃ কর্তব্যঃ [G4748 stoicheo ■]

যদি বয়ং আত্মনা জীৱাম: → তর্হি বয়ম্ আত্মনা অপি চরাম:

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — অত্র গমনবাচকং পদং সামান্যং নাস্ति। চিহ্নং পশ্যতু, G4748: স্ট্রোংমহোদয়স্য মতেন অস্বার্থ: শ্রেण्याং চলনম্, পদন্যাसेন সহ পাদসাম্যরক্ষণম্ ইতি। আত্মা অগ্রে গচ্ছতি, ধর্মপরায়ণ: পুরুষश्চ তেন সহ পাদসাম্যং রক্ষতি। সম্যক্ লক্ষ্যতাম্ — ইদানীমেব গমনং যোদ্ধু: গমনমিৱ শ্রুয়তে। স্পর্ধা যুদ্ধং চ ন দূরে স্ত:।)

I. 1 John 2:6 অহং তস্মিন্ তিষ্ঠামীতি যো গদতি তস্যেদম্ উচিতং যৎ খ্রীষ্টো যাদৃগ্ আচরিতবান্ সো ইপি তাদৃগ্ আচরেৎ

[G4043 peripateo ■]

য: তস্মিন্ তিষ্ঠতীতি বদতি → তেন তথৈৱ চরিতব্যং, যথা স: চচার।

J. 1 Timothy 2:1 মম প্রথম আদেশোহয়ং, প্রার্থনারিনযনিৱেদনধন্যবাদাঃ কর্তব্যঃ [G2150 eusebeia ■] (2) সর্বের্বাং মানৱানাং কৃতে বিশেষতো বয়ং যৎ শান্তৱরেণ নিৰ্ব্ববোধৱরেণ চেষ্টবভক্তিং ব্রিনীতৱরঞ্চাচরন্তঃ কালং যাপয়ামস্তদর্থং নৃপতীনাম্ উচ্চপদস্থানাঞ্চ কৃতে তে কর্তব্যঃ সর্বপ্রথমং, সর্বোষাং মনুষ্যাণাং কৃতে প্রার্থনা: ক্রিয়ন্তাম্ + রাজাং তথা অধিকারে স্থিতানাং সর্বোষাং কৃতে → সর্বস্যাং ইশ্বরভক্তৌ শুচিতায়াং চ শান্তং সুস্থং জীবনম্।

K. 1 Timothy 6:6 সংযতেচ্ছযা যুক্তা য়েশ্বরভক্তিঃ সা মহালাভোপায়ো ভৱতীতি সত্যং [G2150 eusebeia ■]

সন্তোষসহিতং দেৱভক্ত্যা মহান্ লাভ:

L. Titus 2:12 স চাস্মান্ ইদং শিক্ষ্যতি যদ্ ব্রহ্ম অধর্মং সাংসারিকাভিলাষাংশ্চানসীকৃত্য ব্রিনীতৱরেণ ন্যাযেনেশ্বরভক্ত্যা চেলোকে আয়ু

র্যাপয়ামঃ [G2153 eusebos ■] [G763 asebeia ■]

অধর্ম নিরাকৃত্য → অস্মিন্ বর্তমানজগতি সংযমেণ ধাৰ্মিকতয়া ইশ্বরভক্ত্যা চ জীৱাম।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — ইদম্ অস্ति তস্য দৈনিকং পালনম্: শান্তং জীবনম্, সন্তুষ্টিং হৃদয়ম্, সংযতম্ আচরণম্। অসেবেইয়া (G763, অধর্ম:) ত্যাজ্য:, য়ুসেবোস্ (G2153, ধাৰ্মিক:) চ জীবনীয: — অস্মিন্ এৱ বর্তমানে সংসারে, ন কেৱলম্ আগামিনি। মহান্ লাভ: চ ন অধিকানি দ্রৱ্যাণি ভৱন্তি; অপি তু সন্তোষেণ সহ ধাৰ্মিকতা — ঔটার্কইয়া (G841, সন্তোষ:), যং স্ট্রোংস্ পর্যাপ্ততাম্ ইতি বদতি: পর্যাপ্তম্। তথা চর, তত: ধাবনায় সজ্জ: ভৱসি।)

III. ধাবনস্পর্ধা — ইশ্বরস্য সেনায়াং যোদ্ধেৱ সমর্পয়ত

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: — অধুনা গমনং ধাবনং ভৱতি, ধাবনং চ যুদ্ধং ভৱতি। য়ুনানীভাষায়াং গৃহং কিমপি লক্ষ্যতাম্: বিশ্বাসস্য উত্তমং যুদ্ধং তথা অস্মাকং পুরত: স্থাপিতং ধাবনং চ একস্মিন্ এৱ শব্দে তিষ্ঠত: — চিহ্নানি পশ্যন্তু, G73 উভয়ত্র — তথা স্ট্রোংস্ কোশ: তং একং শব্দং সংঘর্ষ:, বিৱাদ:, যুদ্ধং, ধাবনম্ ইতি ব্যাখ্যাত। এতদ্ ধাবনং ধাবিতুম্ এৱ এতদ্ যুদ্ধং যোদ্ধুম্ অস্ति। অত: ইশ্বরস্য পুরুষ: একস্মিন্ কালে ধাবক: যোদ্ধা চ ভৱতি: স: ইশ্বরভক্তিম্ অনুসরতি, স্বানি চ অজ্ঞানি ধর্মস্য সাধনানি রূপেণ ইশ্বরায সমর্পয়তি।)

A. 1 Timothy 6:11 হে ঐশ্বরভক্ত্য লোক ৭৯ম্ এতেভ্যঃ পলায় ধর্ম ঐশ্বরভক্তি ব্রিস্বাসঃ প্রেম সহিষ্ণুতা ক্ষান্তিশ্চৈতান্যচ

[G2150 eusebeia ■]

হে ইশ্বরস্য মনুষ্য, এতানি ত্যজ + ধর্ম, ইশ্বরভাক্তে, বিশ্বাস, প্রেম, ধর্ম, নম্রতাং চ অনুসর।

B. 2 Peter 1:6 জ্ঞান আযতেন্দ্রিয়তাম্ আযতেন্দ্রিয়তাযাং ধৈর্য্যং ধৈর্য্য ঐশ্বরভক্তিম্ [G2150 eusebeia ■]

ইন্দ্রিয়সংযমায় ধৈর্যম্ + ধৈর্য্য ইশ্বরভক্তিঃ।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — পৌল: কথয়তি, তস্য অনুধাবনং কুরু; পেতর: তং সোপানে স্থাপয়তি — ধৈর্য্য ইশ্বরভক্তিং যাবত্। ইশ্বরভক্তি: সোপানস্য প্রথমং সোপানং ন ভবতি, ন চ অন্তিমম্; সা আরোহণে তিষ্ঠতি। নর: তস্য অনুধাবনং করোতি, তং চ যোজয়তি, সোপানম্ উপরি সোপানম্।)

C. 1 Timothy 6:12 বিশ্বাসকপম্ উত্তমযুদ্ধং কুরু, অনন্তজীরনম্ আলম্ব্য যতন্তদর্থং এরম্ আহুতো হভরঃ, বহুসাক্ষিণাং সমক্ষক্ষেপাতমাং প্রতিজ্ঞাং স্বীকৃতরান্ [G73 agon ■]

বিশ্বাসস্য উত্তমং যুদ্ধং কুরু + অনন্তং জীবনং গৃহাণ।

D. 1 Timothy 1:18 হে পুত্র তীমথিয এরযি যানি ভরিষদ্বাক্যানি পুরা কথিতানি তদনুসারাদ্ অহম্ এনমাদেশং এরযি সমর্পয়ামি, তস্যাবিপ্রাযোহযং যত্নং তৈ রাকৈরুত্তমযুদ্ধং করোষি [G4752 strateia ■] [G4754 strateuomai ■]

এতৎ আদেশং তুভ্যং সমর্পয়ামি → যথা ত্বম্ উত্তমং যুদ্ধং যোধয়ে।

E. 2 Timothy 2:3 এরং যীশুখ্রীষ্টেস্যোত্তমো যোদ্ধেব ক্লেশং সহস্ব [G4757 stratiotes ■]

ক্লেশং সহস্ব = যথা যীশুখ্রীষ্টস্য উত্তম: সৈনিক:।

F. 2 Timothy 2:4 যো যুদ্ধং করোতি স সাংসারিকে রূপাণ্যে মগ্নো ন ভরতি কিন্তু স্বনিযোজযিত্রে বোচিতুং চেষ্টতে [G1707 empleko ■]

ন কশ্চন যোদ্ধা অস্য জীবনস্য ব্যবহারেষু আত্মানং বধ্নাতি, যত: স বৃত্তবন্তং প্রসাদয়িতুম্ ইচ্ছতি।
(মম স্বকীয়া: বিচারা: — যোদ্ধা লঘুভারেণ গচ্ছতি, ধাবকোঽপি তথৈব গচ্ছতি। এক: অস্মিন্ জীবনে ব্যাপারেষু ন বধ্যতে, অপর: সর্বং ভারং ত্যজতি। উভৌ একমেব শিক্ষয়ত: — অলং বহতু যথা সমাপনং কুর্য:। চ দ্রষ্টব্যং যত্ কস্মাত্ কারণাত্ যোদ্ধা মুক্তো ভবতি — যথা স: তং প্রীণয়েত্ য: তম্ অবৃণোত্। স্পর্ধা ন মনুষ্যাণাং দৃষ্ট্যর্থং ধাব্যতে, অপিতু তস্যৈব দৃষ্ট্যর্থম্।)

G. Ephesians 6:11 যুযং যৎ শযতানশূলানি নিরাবযিতুং শক্লুথ তদর্থম্ ঐশ্বরীযসুসজ্জাং পরিধদ্ধ্বং [G3833 panoplia ■]

ইশ্বরস্য সম্পূর্ণ কবচং ধারয়ত → যত: যুযং স্খাতুং শক্লুযাত।

H. Romans 6:13 অপবং স্বং স্বম্ অঙ্গম্ অধর্মস্যাঙ্গং কৃৎরা পাপসেরাযাং ন সমর্পযত, কিন্তু শ্রাশানাদ্ উথিতানির স্বান্ ঐশ্বরে সমর্পযত স্বান্যঙ্গানি চ ধর্মাস্ত্রস্বরূপাণীশ্বরম্ উদ্দিশ্য সমর্পযত [G3936 paristemi ■]

স্বয়ং ইশ্বরায সমর্পযত + যুগ্মাকম্ অঙ্গানি ধর্মস্য সাধনানি ইশ্বরায সমর্পযত।

I. 2 Timothy 3:12 পরন্তু যারন্তো লোকাঃ খ্রীষ্টেন যীশুনেশ্বরভক্তিম্ আচরিতুম্ ইচ্ছন্তি তেষাং সরেব্বাম্ উপদ্রো ভরিষ্যতি [G2153 eusebos ■]

সর্বং য়ে খ্রীষ্টীয়ীশৌ ধার্মিকতয়া জীবিতুম্ ইচ্ছন্তি → তে উপদ্রবং সহিষ্যন্তে।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — অত্র মূল্যং গণয়ত, আগমনকালে চ চলিত: মা ভব। যে সর্বং খ্রীষ্টীয়ীশৌ eusebos (G2153, ধার্মিক) জীবনং যাপয়িষ্যন্তি তে উপদ্রবং সহিষ্যন্তে এব — ন কেচন মাত্রম্, ন বা সম্মাব্যমেতত্। উপদ্রব: ন তস্য চিহ্নং যত্ গমনং বিপথং গতম্; অপিতু তস্য চিহ্নং যত্ ত্বং মার্গে এব বর্তসে। কঠিনতাং সহস্ব।)

J. 1 Corinthians 9:24 পণ্যলাভার্থং য়ে ধারন্তি ধারতাং তেষাং সরেব্বাং কেবল একঃ পণ্যং লভতে যুগ্মাভিঃ কিমেতন্ন জ্ঞায়তে? অতো যুযং যথা পণ্যং লক্ষ্যক্বে তথৈব ধারত [G4712 stadion ■]

রঙ্গভূমৌ ধাবন্ত: সর্বং ধাবন্তি + তথা ধাবত যথা প্রাপ্যাত।

K. 1 Corinthians 9:25 মল্লা অপি সরব্বভোগে পরিমিতভোগিনো ভরন্তি তে তু ম্লানাং স্রজং লিঙ্গন্তে কিন্তু রযম্ অম্লানাং লিঙ্গামহে [G75 agonizomai ■]

সর্বেষু বিষয়েষু সংযমী + তে নশ্বরং কিরীটং → বয়ম্ অনশ্বরং।

L. Hebrews 12:1 অতো হেতোবেতারৎসাক্ষিমৈঘে রৌষ্টিতাঃ সন্তো রযমপি সরব্বভাবম্ আশুবাধকং পাপঞ্চ নিক্ষিপ্যাম্মাকং গমনায নিরূপিতে মার্গে ধৈর্য্যেণ ধারাম [G73 agon ■]

সর্বং ভারং ত্যজাম + অসমত্সমক্ং স্থাপিতাং ধাবনস্পর্ধা ধৈর্য্যেণ ধাবাম।

M. Isaiah 40:31 ✎ read this in your Bible

য়ে পরমেশ্বরং প্রতীক্ষন্তে তে স্ববলং নবীকরিষ্যন্তি + ধাবিষ্যন্তি, ন চ শ্রান্তা ভবিষ্যন্তি + গমিষ্যন্তি, ন চ মূর্চ্ছা যাস্যন্তি।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — ভবিষ্যদ্বক্তা সম্পূর্ণ মার্গম্ একস্যাং পঙ্ক্তৌ স্থাপয়তি: উত্পত, ধাব, গচ্ছ। ইশ্বর: জানাতি যত্ ধাবক: শ্রান্তো ভবতি; অত: বলং ধাবকস্য স্বকীযং ন ভবতি। য়ে যহোবাম্ প্রতীক্ষন্তে তে স্ববলং নূতনীকুর্বন্তি — তস্য শক্তি:, তব পদানি, অন্তং যাবত্। ধাব, মা চ শ্রাম্য; গচ্ছ, মা চ কলাম্য; পঙ্ক্তি: তব পুরত: বর্ততি।)

IV. অন্তিমরেখা — ধার্মিকতা, বচনং চ, সর্বদা তিষ্ঠতি

মম ব্যক্তিগতবিচারা: — প্রত্যেকস্য ধাবনস্য অন্ত: ভবতি, অয়ং চ অন্ত: প্রাচীর: ন ভবতি; স: কিরীট: ভবতি। সীমাযাং পৌলং শৃণু: অর্পণায় সজ্জ:; মার্গ: সমাপ্ত:, বিশ্বাস: রক্ষিত: — যং চ মার্গ স: বদতি, তস্য চিহ্নং পশ্য, G1408, স্ট্রোংস্ কোশে ধাবনম্ ইতি উচ্যতে। সীমাযা: পরং কিং তিষ্ঠতি তত্ চ অবধেহি:

सांचेतः किरीटः, माहेमा, तत् च वचनं यत् तान् सर्वान् प्रतिज्ञातवत्, यत् सर्वदा तिष्ठते।

A. 1 Timothy 4:8 यतः शाबीरिको यत्तः श्रद्धाफलदो भवति किञ्चिन्मन्त्रभक्तिरैहिकपात्रिकजीवनयोः प्रतिज्ञायुक्तौ सती सर्वत्र फलदा भवति [G2150 eusebeia ■] [G1129 gumnasia ■]

शारीरिकव्यायामः किञ्चित् एव लाभप्रदः + धर्मपरायणता सर्वेषु कार्येषु लाभप्रदा = वर्तमानजीवनस्य भाविजीवनस्य च प्रतिज्ञा।

B. 2 Timothy 4:6 मम प्राणानाम् उत्सर्गो भवति मम प्रस्थानकालोपातिष्ठे [G359 analysis ■]

अहम् इदानीं बलिदानार्थं सज्जः अस्मि + मम प्रस्थानस्य कालः समीपे अस्ति।

C. 2 Timothy 4:7 अहम् उत्तमयुद्धं कृतवान् गन्तर्यामार्गस्यान्तं यारद् धारितवान् विश्वासश्च बन्धितवान् [G1408 dromos ■] [G73 agon ■]

मया शोभनं युद्धं युद्धम् + मया मार्गः समापितः + मया विश्वासः रक्षितः।

D. 2 Timothy 4:8 शेषं पुण्यमुकुटं मदर्थं बन्धितं रिद्यते तच्च तस्मिन् महादिने यथाथरिचाबकेण प्रभुना मह्यं दायिष्यते केवलं मह्यम् इति नहि किञ्च यारब्धो लोकान्तस्योगमनम् आकाङ्क्षन्ते तेभ्यः सर्वेभ्यो हपि दायिष्यते [G4735 stephanos ■]

धर्मस्य किरीटः + न केवलं मह्यम्, अपि तु तेभ्यः सर्वेभ्यः अपि येऽस्य प्रकटीभावं प्रीणन्ति।

(मम स्वकीयाः विचाराः — मुकुटः एकस्मै धावकाय न भवति। न केवलं मह्यम् इति पौलः वदति, अपि तु तेभ्यः सर्वेभ्यः च ये तस्य आगमनं प्रीयन्ते। सैव रेखा युष्मत्पुरतः वर्तते, सैव च धर्मात्मा न्यायकर्ता तत्र तिष्ठति। तस्य आगमनं प्रीयध्वं, स्वकीयं च मार्गं समाप्नुत।)

E. Hebrews 12:2 यश्चास्माकं विश्वासस्योत्प्रेषणः सिद्धिकर्ता चास्ति तं यीशुं बीष्मामहे यतः स स्वसन्मुखश्चित्तानन्दस्य प्राप्त्यर्थम् अपमानं तुच्छीकृत्य क्रुशस्य यातनां सोढवान् ईश्वरीयसिंहासनस्य दक्षिणपार्श्वे समुपरिष्ठेरांश्च [G5051 teleiotes ■]

यीशुं प्रति अवलोकनम् = अस्माकं विश्वासस्य आदिकर्ता सिद्धिकर्ता च।

F. 1 Timothy 3:16 अपरं यस्य महत्त्वं सर्वस्वीकृतम् ईश्वरभक्त्यै निगूढराक्यमिदम् ईश्वरो मानवदेहे प्रकाशितं आत्मानं सपुण्यीकृतो दूतैः सन्दृष्टः सर्वजातीयानां निकटे घोषितो जगतो विश्वासपात्रीभूतश्चेजःप्राप्तये स्वर्गं नीतश्चेति [G2150 eusebeia ■]

धर्मस्य निगूढतत्त्वम् → ईश्वरः मांसे प्रकटितः → महिमाम् आरोपितः।

(मम स्वकीयाः विचाराः — ईश्वरभक्तेः रहस्यम् एतस्य अध्ययनस्य आरम्भे उद्घाटितम्, अन्ते च समापितम्। आरम्भः अयम्: ईश्वरः मानवशरीरे प्रकटितः अभवत् — तत्रैव ईश्वरभक्तिः प्राप्यते। अन्तः अयम्: महिमाम् आरोपितः अभवत् — तत्रैव गमनं समाप्यते। स्त्रीष्टः स्वयं समग्रं पथं प्रथमं चलितवान्, तं च सम्पूर्णं कृतवान्: यं पथं त्वं गच्छसि सः पथः पूर्वमेव गतः अस्ति, तव विश्वासस्य समापकः च तस्य पथस्य अन्ते तिष्ठति।)

G. 1 Peter 1:24 सर्वप्राणी भूगैस्तन्यस्तुतेजस्तृणपुष्परं तृणानि परिशुष्यति पुष्पाणि निपतन्ति च [G5528 chortos ■]

सर्व मांसं तृणमिव अस्ति + तृणं शुष्यति, तस्य पुष्पं च भ्रश्यति।

H. 1 Peter 1:25 किञ्च राक्यं परेशस्यानन्तकालं रितिष्ठते तदेव च राक्यं सुसंरादेन युष्माकम् अन्तिके प्रकाशितं [G3306 meno ■] परन्तु प्रभोः वचनं सर्वदा तिष्ठति + इदम् एव तद्वचनं यत् सुसमाचारेण युष्मान् प्रति प्रचारितम्।

I. Isaiah 40:8 ↗ read this in your Bible

तृणं शुष्यति, पुष्पं म्लायति + अस्मद्-ईश्वरस्य वचनं सदा स्थास्यति।

(मम स्वकीयविचाराः — पीतरं यशायाहस्य समीपे स्थापयत, एकं स्वरं शृणुत। यशायाहः वदति, अस्मद्-ईश्वरस्य वचनं सर्वदा स्थास्यति; पीतरः वदति, प्रभोः वचनं सर्वदा तिष्ठति — तथा च 'तिष्ठति' इति यत् वचनम् अनुवादितम् (चिह्नं द्रष्टव्यम्, G3306), तत् एव वचनं यत् 'वसति' इति अनुवादितम्। यशायाहेन तत् बहुपूर्वं लिखितम्; पीतरेण तत् बहुपश्चात् सिद्धीकृतम् — तदेव वचनं तदा अपि स्थितवत्, सुसमाचारेण च युष्मभ्यं प्रचारितम्। वचनं वसनेन स्वयं सिद्धं करोति। धार्मिकता च तेन सह वसति, यतो धार्मिकतायां वर्तमानजीवनस्य भविष्यज्जीवनस्य च प्रतिज्ञा विद्यते।)

J. Psalm 119:89 ↗ read this in your Bible

हे परमेश्वर, तव वचनं सर्वदा स्वर्गे स्थिरम् अस्ति।

K. Matthew 24:35 नभोमेदिन्या लूण्ठयोर्बपि मम राक् कदापि न लोभ्यते [G3056 logos ■]

द्यौः पृथिवी च लोपं गमिष्यन्ति + मम वाक्यानि तु न लोपं गमिष्यन्ति।

(मम स्वकीयाः विचाराः — मांसं तृणम् अस्ति, दौडश्च गच्छति; स्वर्गं पृथिवी च स्वयमपि गमिष्यतः; परन्तु तस्य वचांसि न गमिष्यन्ति। यः कश्चित् धर्मपरायणतायै धावति स तस्मै धावति यत् सर्वदा तिष्ठति। अस्य मार्गस्य किमपि रेखायां न नश्यति; यद्वचनं त्वं तत्र आहूतवत् तत् सर्वेषु अन्येषु पतत्सु तिष्ठति।)

द्वयोः मुखम्

2 Timothy 4:8 शेषं पुण्यमुकुटं मदर्थं बन्धितं रिद्यते तच्च तस्मिन् महादिने यथाथरिचाबकेण प्रभुना मह्यं दायिष्यते केवलं मह्यम् इति नहि किञ्च यारब्धो लोकान्तस्योगमनम् आकाङ्क्षन्ते तेभ्यः सर्वेभ्यो हपि दायिष्यते [G4735 stephanos ■]

धर्मस्य किरीटः + तेभ्यः सर्वेभ्यः अपि येऽस्य आगमनं प्रीणन्ति।

Revelation 2:10 ৳ৱযা যো যঃ ক্লেশঃ সোঢ়ৱ্যন্তুস্মাৎ মা ভৈষীঃ পশ্য শযতানো যুস্মাকং পৰীক্ষাৰ্থং কাংশিৎ কাৰাযাং নিষ্ক্ৰিয়তি দশ দিনানি যাবৎ ক্লেশো যুস্মাসু ৰতিয্যতে চ ৳ৱং মৃত্যুপৰ্য্যন্তং বিশ্বাস্যো ভৱ তেনাহং জীৱনকিৰীটং তুভ্যং দাস্যামি [G4735 stephanos ■]
তং মৃত্যুপৰ্য্যন্তং বিশ্বাসী ভব → অহং তুভ্যং জীৱনমুকুটং দাস্যামি।

1 Peter 5:4 তেন প্ৰধানপালক উপস্থিতে যুষ্ম অস্মানং গৌৰৱকিৰীটং লক্ষ্যধেব [G262 amarantinos ■]
যদা প্ৰধানপালক: প্ৰকটীভৱিষ্যতি → গৌৰৱস্য কিৰীটং যত্ কদাপি ন ম্লায়তি।

2 Corinthians 13:1 এততৃতীয়াৰম্ অহং যুস্মৎসমীপং গচ্ছামি তেন সৰ্ব্বা কথা দ্বয়োজ্ঞযাণাং ৱা সাক্ষিণাং মুখেন নিশ্চেষ্যতে [G3144 martus ■]
দ্বয়ো: ত্ৰযাণাং বা সাক্ষিণাং বদনে প্ৰতিবচনং সৰ্বং স্থাপিতং ভৱিষ্যতি।

(মম স্বকীয়া: বিচাৰা: — ত্ৰয়: সাক্ষিণ: ধাৱনস্য অন্তে তিষ্ঠন্তি, প্ৰত্যেকশ্চ কিৰীটং প্ৰদৰ্শয়তি। পৌল: কথয়তি, তস্মিন্ দিনে ধৰ্মস্য কিৰীটম্। প্ৰভু: যোহনে কথয়তি, মৃত্যুপৰ্য্যন্তং বিশ্বাসযুক্ত: ভৱ, জীৱনস্য কিৰীটং চ। পেত্ৰ: কথয়তি, যদা প্ৰধান: পালক: প্ৰকটীভৱতি, তদা মহিমায়ুক্তং কিৰীটং যত্ ন ম্লানং ভৱতি। ধৰ্ম:, জীৱনং, মহিমা — দ্বয়ো: ত্ৰযাণাং বা সাক্ষিণাং মুখে বিষয়: স্থাপিতো ভৱতি: অস্য ধাৱনস্য অন্ত: কিৰীটং ভৱতি, তত্ চ ন ম্লানং ভৱতি।)

ছায়া চ পূৰ্তিশ্চ

Shadow Genesis 5:24 ↗ *read this in your Bible*
হনোক: ইশ্বৰেণ সহ অচৰত্ → ইশ্বৰ: তং জগৃহে।

Fulfillment Hebrews 11:5 বিশ্বাসেন হনোক্ যথা মৃত্যুং ন পশ্যেৎ তথা লোকান্তৰং নীতঃ, তস্যোদ্দেশ্যশ্চ কেনাপি ন প্ৰাপি যত ঈশ্বৰন্তং লোকান্তৰং নীতৱান্, তৎপ্ৰমাণমিদং তস্য লোকান্তৰীকৰণাৎ পূৰ্ব্বং স ঈশ্বৰায় ৰোচিতৱান্ ইতি প্ৰমাণং প্ৰাপ্তৱান্ [G3346 metatithemi ■]
হনোক: যথা মৃত্যুং ন পশ্যেৎ তথা স্থানান্তৰিত: অভৱত্ + তস্য ইদং সাধ্যম্ আসীত্ যত্ স: ইশ্বৰং প্ৰসাদয়ত্।

Fulfillment 1 Thessalonians 4:17 অপৰম্ অস্মাকং মধ্যে যে জীৱন্তোহৰশেষ্যন্তে ত আকাশে প্ৰভোঃ সাক্ষাৎকৰণার্থং তৈঃ সাক্ষং মেঘৱাহনেন হৰিষ্যন্তে; ইত্থং ৱয়ং সৰ্ব্বদা প্ৰভুনা সাক্ষং স্থাস্যামঃ [G726 harpazo ■]
সহৈৱ ঊৰ্ধ্ব নীতা: + আকাশে প্ৰভু সাধ্যাকৰ্ত্তম্ → তথা ৱয়ং সদা প্ৰভুণা সহ স্থাস্যাম:।

(মম স্বকীয়া: বিচাৰা: — মুসা: সংক্ষেপেণ তত্ লিখিতৱান্: স: পৰমেশ্বৰেণ সহ অচৰত্, স চ নাসীত্। নৱীনং নিয়মপত্ৰং তত্ বিস্তাৰেণ উদ্ঘাটয়তি: ৰূপান্তৰিত:, যথা স: মৃত্যুং ন পশ্যেৎ; তস্য ৰূপান্তৰণাত্ পূৰ্ব্ৱং চ ইদং সাধ্যম্ আসীত্, যত্ স: পৰমেশ্বৰম্ অতোষয়ত্। একস্মিন্ পুৰুষে সম্পূৰ্ণ: চাৰ: তত্ৰ ৱৰ্ততি — স: অচৰত্, স: পৰমেশ্বৰম্ অতোষয়ত্, পৰমেশ্বৰ: তম্ ঊৰ্ধ্বম্ অনয়ত্। ভক্তে: ৱহস্যম্ অপি তথৈৱ সমাপ্যতে, মহিম্নি ঊৰ্ধ্বং গৃহীতম্; তথৈৱ চ প্ৰত্যেক: য: তেন সহ ৱৰতি — ঊৰ্ধ্বম্ আকৃষ্ট:, সৰ্বদা প্ৰভুণা সহ স্থাতুম্। পৰমেশ্বৰেণ সহ চাৰ: শ্মশানে ন সমাপ্যতে। স: তেন সহ সমাপ্যতে।)

সমাপনম্

Philippians 1:6 যুস্মান্মধ্যে যেনোন্তমং কৰ্ম্ম কৰ্ত্তুম্ আৰম্ভি তেনৈৱ যীশুখ্ৰীষ্টস্য দিনং যাবৎ তৎ সাধয়িষ্যত ইত্যস্মিন্ দৃঢ়বিশ্বাসো মমাশ্চে [G2005 epiteleo ■]
যেন যুস্মাসু সত্কৰ্ম্ম আৰম্ভ → স তত্ যীশুখ্ৰীষ্টস্য দিনং যাবত্ সাধয়িষ্যতি।

Jude 1:24 অপৰম্ যুস্মান্ স্বলনাদ্ ৰক্ষিতুম্ উল্লাসেন স্তীযতেজসঃ সাক্ষাৎ নিৰ্দোষান্ স্থাপয়িতুঞ্চ সন্মর্থো [G679 aptaistos ■]
ভৱন্তং পতনাত্ ৱক্ষিতুং সমর্থ: + অত্যানন্দেন স্বকীয়গৌৰৱস্য সন্মুখে নিৰ্দোষান্ স্থাপয়িতুং সমর্থ:।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচাৰা: — অধুনা গৃহং যাবত্ সম্পূৰ্ণ মাৰ্গং সজ্জগৃহ্নাতু। প্ৰথমং সৰ্পণম্: ইশ্বৰভক্তি: স্বকীয়ং ৰলং ন ভৱতি; সা তস্য দিব্যেন শক্ত্যা দত্তা, একস্মিন্ পুৰুষে চ প্ৰাপ্তা — ইশ্বৰভক্তি: ৱহস্যম্, মানৱশাৰীৰে প্ৰকটিত: ইশ্বৰ:। তত: গমনম্: যথা হনোক: অগচ্ছত্, যথা নোহ: অগচ্ছত্, যথা অৰ্জুনায় আজ্ঞা দত্তা — মম সমক্ষং গচ্ছ, সম্পূৰ্ণশ্চ ভৱ; তস্মিন্ গচ্ছ, যথা স: এৱ অগচ্ছত্। তত: ধাৱনং যুদ্ধং চ: ইশ্বৰভক্তিম্ অনুসৰ, উত্তমং যুদ্ধং যুদ্ধস্ব, ক্লেশং সহস্ব, স্বানি অঙ্গানি ইশ্বৰায় সমৰ্পয়। তত: ৱেখা: মাৰ্গ: সমাপ্ত:, বিশ্বাস: ৱক্ষিত:, মুকুট: স্থাপিত: — সৰ্বস্য চ অধ:, যত্ ৱচনং কদাপি ন ৱ্যেতি। পশ্য চ চিহ্নং, G2005: ষ্টাণ্ডমহোদয়স্য মতে অস্যা: প্ৰতিজ্ঞায়া: "সাধয়তি" ইতি শব্দস্য অৰ্থ: সম্পাদনং সমাপনং চ ভৱতি — য: যুস্মাসু উত্তমং কাৰ্যম্ আৰম্ভৱান্ স: তত্ সমাপয়িষ্যতি। স: ত্বাং গন্তুং শিক্ষিতৱান্; স: ত্বাং পতনাত্ ৱক্ষিতুং সমর্থ:; স: ত্বাং মহতা আনন্দেন ৱেখায়া: পাৰং নেষ্যতি। গমনং কুরু।)

অভ্যাসপ্ৰশ্নাবলী

১. ১ তীমথিয়: ৬:৬ — কিন্তু সন্তোষসহিতা ভক্তি: তু অস্তি:

- মহান্ লাভ:
- মহতী শান্তি:
- সৰ্বেষু বিষয়েষু লাভপ্ৰদম্

২. উত্পত্তি: ৫:২৪ — তথা হনোক্ পৰমেশ্বৰেণ সহ চচাৰ, স চ নাভৱত্; যত::

- পৰমেশ্বৰ: তস্মৈ দৰ্শনং দদৌ

- b) ईश्वरः तं गृहीतवान्
- c) स ईश्वरम् अतोषयत्

3. द्वितीयपत्रः १:३ — यथा तस्य दैवीशक्तिः अस्मभ्यं तानि सर्वाणि वस्तूनि प्रदत्तवती यानि सम्बद्धानि सन्ति:

- a) महिमा च सद्गुणश्च
- b) जीवनं धार्मिकत्वं च
- c) धर्मः सत्यता च

४. २ तीमथियः २:४ — यो योद्धा भवति, स स्वयं जीवनव्यवहारैः सह न ग्रन्थ्नाति:

- a) शैतानस्य कुयुक्तयः
- b) पापं यत् अस्मान् सुखेन वेष्टयति
- c) अस्य जीवनस्य व्यापाराः

५. १ तीमथियः ३:१६ — महत् भक्तेः रहस्यम्: ईश्वरः शरीरे प्रकटीभूतः, आत्मना धर्मिकतया प्रमाणितः, द्रुतैः दृष्टः, अन्यजातिभ्यः प्रचारितः, जगति विश्वासेन गृहीतः, महिमयाम् आरोपितः इति उपरि गृहीतः:

- a) महिमा
- b) स्वर्गः
- c) मेघाः

६. २ तीमथियः ४:८ — इतः परं मदर्थं संचितः वर्तते मुकुटः:

- a) जीवनम्
- b) महिमा
- c) धर्मः

७. १ पितरस्य प्रथमं पत्रम् १:२५ — परन्तु प्रभोः वचनं सर्वदा तिष्ठति। तच्च वचनम् एतद् यत्:

- a) स्वर्गे स्थिरीभूतम् अस्ति
- b) सुसमाचारेण युष्मभ्यं प्रचारितम्
- c) न अतिक्रमिष्यति

उत्तरकुञ्जिकाः 1-a, 2-b, 3-b, 4-c, 5-a, 6-c, 7-b

एतत् अध्ययनं कथं शाखते

छाया कथं प्रकाशं आनयति: द्वौ पुरुषौ ईश्वरेण सह चलितवन्तौ, आनीतौ च — हनोक् रूपान्तरितः यत् सः मृत्युं न पश्येत् (इब्रिपत्रे ११:५), एलीयश्च वातचक्रेण स्वर्गं गतः (राजानां द्वितीयपुस्तके २:११) — तौ तेषां सह स्थापयतु ये जीवन्तः तिष्ठन्ति, वायुमध्ये प्रभुं मिलितुं आकृष्टाः (थिस्सलौनीकीयान् प्रति प्रथमपत्रे ४:१७), स्वकीयाध्ययनार्थं सज्जौ।

नवीनः नियमः एतत् कथं व्याख्याति: अब्रामाय उक्तम् आसीत्, मम समक्षं चर, सम्पूर्णश्च भव (उत्पत्तिः १७:१); अस्मभ्यम् उक्तम्, तस्य दैवी शक्तिः जीवनभक्त्योः सम्बद्धानि सर्वाणि वस्तूनि अस्मभ्यं दत्तवती (द्वितीयपत्रं पितरस्य १:३) — यत् पूर्वम् आज्ञापितम् आसीत् तत् इदानीं ख्रीष्टे दत्तम् अस्ति।

शब्दानां महत्त्वं कथम्: १ तीमथियः ६:१२ इत्यस्य युद्धं तथा इब्रिगः १२:१ इत्यस्य धावनं च एकः एव यूनानीशब्दः भवतः (G73 — संघर्षः, युद्धम्, धावनम्), तथा गलातिनः ५:२५ (G4748) इत्यस्य गमनं पङ्क्तौ पदव्यासं रक्षितुम् अस्ति, यथा सैनिकः चलति — कः शब्दः कुत्र स्थाने तिष्ठति, कस्मात् कारणात् च, तत् चिह्नितं कुरु।

तत् अनन्तं यावत् कथं प्राप्नोति: भक्तिः वर्तमानजीवनस्य तथा भाविजीवनस्य च प्रतिज्ञां धत्ते (१ तीमुथियुस ४:८) — धर्मस्य मुकुटश्च केवलं पौलाय न, अपि तु तस्य प्रकटनं प्रीणद्भ्यः सर्वेभ्यः अपि दीयते (२ तीमुथियुस ४:८)।

शशकमार्गः: भक्तेः रहस्यम् (१ तीमथियः ३:१६) अधर्मस्य रहस्यस्य (२ थिस्सलुनीकीनः २:७) विरुद्धं तिष्ठति — एकस्य प्रेरितस्य मुखे द्वे रहस्ये स्तः, प्रत्येकं मनुष्येषु प्रवर्तमाने — तद् अन्वेषय।

संभाव्यं रहस्योद्घाटनम्: १ पितरः १:२५ इत्यत्र यत् पदं 'तिष्ठति' (G3306) इति अनूदितम्, तदेव पदं द्राक्षालतायाः दृष्टान्ते 'तिष्ठत' इति अनूदितम् — मयि तिष्ठत (योहनः १५:४) इत्यत्र। तत् पदं सर्वदा तिष्ठति; तस्मिन् तिष्ठत, एवं यत् कदापि नश्यति न तस्मिन् एव यूयं तिष्ठथ।

SOURCES & CREDITS

Scripture: Sanskrit New Testament in Assamese Script (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).